कुल पृष्ठ संख्या–24 (कवर पेज सहित) क्रम संख्या....

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर

माध्यमिक परीक्षा

(परीक्षार्थी द्वारा स्वयं भरा जाना चाहिये)

Candidate's Roll No. In English

(In Figures)

(In Words)

परीक्षार्थी का नामांक हिन्दी में

शब्दों में

नोट :– परीक्षार्थी उपरोक्त के अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका के अन्य किसी भी भाग में अपना नामांक नहीं लिखें।

माध्यम – हिन्दी ✓ अंग्रेजी

विषय हिन्दी

परीक्षा का दिन

दिनांक

नोट :– परीक्षार्थी के लिए आवश्यक निर्देश इस पृष्ठ के पिछले भाग पर उल्लेखित हैं। जिन्हें सावधानी पूर्वक पढ़ लें व पालना अवश्य करें।

परीक्षक हेतु निर्देश :– (1) परीक्षक को उपरोक्त सारणी अनुसार प्राप्तांक भरना अनिवार्य हैं, अन्यथा नियमानुसार दंडित किया जायेगा।

(2) परीक्षक उत्तर पुस्तिका के अन्दर के पृष्ठों के बायीं ओर निर्धारित कॉलम में लाल इंक से अंक प्रदत्त करें।

(3) कुल योग भिन्न में प्राप्त होने पर उसे पूर्णांक में ही परिवर्तित कर अंकित करें (उदारणार्थ : 15 ¼ को 16, 17 ½ को 18, 19 ¾ को 20)

प्रश्नवार प्राप्तांकों की सारणी
(परीक्षक के उपयोग हेतु)

प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक	प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक
1		19	
2		20	
3		21	
4		22	
5		23	
6		24	
7		25	
8		26	
9		27	
10		28	
11		29	
12		30	
13		31	
14		योग	
15		प्राप्त अंकों का कुल योग (Roundoff)	
16		अंकों में	शब्दों में
17			
18			

परीक्षक के हस्ताक्षर .... संकेतांक

प्रमाणित किया जाता है कि इस उत्तर पुस्तिका के निर्माण में 58 जी.एस.एम. क्रीमवोव कागज ही उपयोग में लिया गया है। 161/2017

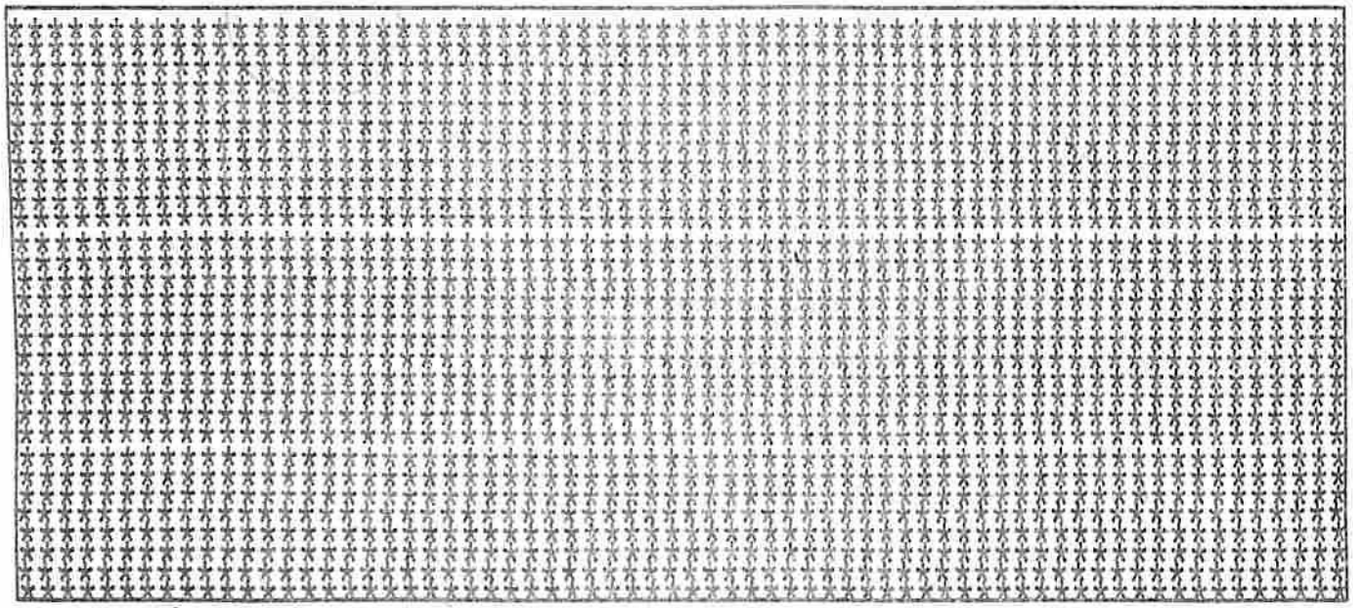

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश

1. समस्त प्रश्नों का हल निर्धारित शब्द सीमा में इसी उत्तर पुस्तिका में करना है। विशेष परिस्थिति में अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका पृथक से उत्तर पुस्तिका भरी हुई होने पर पर्यवेक्षक एवं वीक्षक की अनुशंसा पर ही उपलब्ध कराई जायेगी।
2. प्रश्न–पत्र पर निर्धारित स्थान पर अपना नामांक लिखें।
3. प्रश्न–पत्र हल करने के पश्चात् जिस पृष्ठ पर हल समाप्त होता है, उस पर अन्त में "समाप्त" लिखकर अन्त के सभी रिक्त पृष्ठों को तिरछी लाईन से काटें।
4. निम्न बातों का विशेष ध्यान रखें अन्यथा अनुचित साधनों की रोकथाम अधिनियम के तहत कार्यवाही की जा सकेगी।
   (i) उत्तर पुस्तिका के ऊपर/अन्दर तथा प्रश्नोत्तर के किसी भी भाग में चाही गई सूचना के अलावा अपना नामांक, नाम, पता, फोन नम्बर अथवा पहचान की कोई अन्य प्रकार की सूचना आदि अंकित नहीं करें अन्यथा "अनुचित साधनों के प्रयोग" के अन्तर्गत कार्यवाही की जावेगी।
   (ii) उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों को फाड़ें नहीं। उत्तर–पुस्तिका के मुख पृष्ठ पर अंकित संख्या के अनुसार पृष्ठ पूरे होने चाहिये। परीक्षार्थी उत्तरपुस्तिका प्राप्त करते ही पृष्ठ संख्या की जांच कर लें यदि पृष्ठ कम/अधिक या क्रम में नहीं हैं तो वीक्षक से तुरन्त बदलवा लें।
   (iii) परीक्षा केन्द्रों पर पुस्तक, लेख, कागज, केलक्यूलेटर, मोबाईल, पेजर आदि किसी भी प्रकार का इलेक्ट्रोनिक उपकरण तथा किसी भी प्रकार का हथियार आदि ले जाना निषेध हैं।
   (iv) वस्त्र, स्केल, ज्योमेट्री बॉक्स पर कुछ न लिखकर लावें। टेबुल के आस–पास कोई अवैध सामग्री नहीं होनी चाहिये, इसकी जांच कर लें।
   (v) अपनी उत्तर पुस्तिका/ग्राफ/मानचित्र आदि परीक्षा भवन से बाहर ले जाना दण्डनीय अपराध है, अतः परीक्षा समाप्ति पर उत्तर पुस्तिका वीक्षक को बिना सौंपे परीक्षा कक्ष नहीं छोड़ें।
5. उत्तरों को क्रमानुसार एक ही स्थान पर लिखें। प्रश्न क्रमांक भी सही अंकित करें, अन्यथा दण्ड स्वरूप परीक्षक को 1 अंक कम करने का अधिकार है। बीच में उत्तर पुस्तिका के पृष्ठ रिक्त न छोड़ें। गणित विषय के लिए रफ कार्य उत्तर पुस्तिका के अंतिम पृष्ठों पर करें तथा तिरछी रेखा से काटें।
6. जहाँ तक हो सके प्रश्न के सभी भाग के उत्तर, उत्तर पुस्तिका में एक ही स्थान पर अंकित करें।
7. भाषा विषयों को छोडकर शेष सभी विषयों के प्रश्न–पत्र हिन्दी–अंग्रेजी दोनों भाषा में मुद्रित है। किसी भी प्रकार की त्रुटि/अन्तर/विरोधाभास होने पर हिन्दी भाषा के प्रश्न को ही सही माना जाये।

शिक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

"खण्ड-1"

1. उपर्युक्त गद्यांश का शीर्षक – "कबीर: एक महान् युगद्रष्टा"।

2. कबीर का व्यक्तित्व इतना ऊँचा था कि उनके सामने टिक सकने की किसी में हिम्मत नहीं थी। उन्होंनें अपने व्यक्तित्व को सुधार कर सबके सामने एक महान आदर्श प्रस्तुत किया।

3. कबीर सभी धर्मों को एकसमान मानते थे। उन्होनें हिन्दू व मुस्लिम धर्म के बीच समन्वय को बढ़ावा दिया। वे कर्मकाण्ड, बाह्याडम्बर व मूर्तिपूजा के विरोधी थे। उन्होनें धर्म की बुराइयों को निकालकर सबके सामने रखा। इस प्रकार कबीर धर्म सहिष्णु थे।

4. भारतवासियों के प्रति कवि आक्रोशित है क्योंकि वे भारत की स्वाधीनता के लिए संघर्ष नहीं कर रहे हैं तथा कमजोर बनकर बैठे हैं। कवि उन्हें संघर्ष हेतु प्रेरित कर रहा है।

5. जब किसी राष्ट्र के नागरिक वीरता का प्रदर्शन नहीं कर भीरु बन जाते है व संघर्ष का मार्ग छोड़ देते हैं तब पुण्य का क्षय व स्वार्थ का उदय होता है।

6. युद्ध क्षेत्र में तलवार की सहायता से युद्ध कौशल व वीरता का प्रदर्शन करके धर्म का पालन किया जा सकता है। पराधीन राष्ट्र के नागरिकों के लिए स्वाधीनता संघर्ष ही उनका प्रथम धर्म है। इस प्रकार स्वाधीनता के लिए युद्ध करके धर्म पालन किया जा सकता है।

कृ.पृ.उ.

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

"खण्ड - उ"

9. क्रिया :- जिस शब्द से किसी कार्य का होना या करना पाया जाये उसे क्रिया कहते है। उदाहरण - चलना, तैरना।

कर्म के आधार पर क्रिया के भेद :-

कर्म के आधार पर क्रिया के दो भेद होते हैं -

1. अकर्मक क्रिया
2. सकर्मक क्रिया

(1) अकर्मक क्रिया -

वह क्रिया जिसमें कर्त्ता द्वारा किये गये कार्य का फल कर्म पर नहीं पड़कर कर्ता पर ही पड़ता है, अकर्मक क्रिया कहलाती है। इस क्रिया में कर्म का अभाव होता है।

उदाहरण - राम सोता है।
सीता पढ़ती है।

(2) सकर्मक क्रिया -

वह क्रिया जिसमें कर्त्ता द्वारा किए गए कार्य का फल कर्म पर गिरता है, सकर्मक क्रिया कहलाती है। इसमें कर्म पाया जाता है।

उदाहरण - सीता पुस्तक पढ़ती है।
मैनें राम को पुस्तक दी।

10. राधा ने मिठाई खाई।

कारक → कर्ता कारक (राधा), कर्म कारक (मिठाई)

काल → पूर्ण भूतकाल

वाच्य → कर्तृवाच्य

क द्वारा अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

11. बहुब्रीहि समास :-
वह समास जिसमें पूर्व व उत्तर दोनों पदों से तीसरा अन्य अर्थ निकलता है तथा पूर्व व उत्तर पद प्रधान न होकर वही अन्य अर्थ प्रधान होता है, बहुब्रीहि समास कहलाता है।
उदाहरण –
(1) दशानन – दश है आनन जिसके वह (रावण)
(2) लम्बोदर – लम्बा है उदर जिसका वह (गणेश)
(3) हलधर – हल को धारण करता है जो (बलराम)
(4) चन्द्रशेखर – चन्द्र है शेखर (मस्तक) पर जिसके (शिव)
(5) शैलजा – शैल की पुत्री है जो वह (पार्वती)
(6) चक्षुश्रुवा – चक्षु (नेत्र) ही है श्रुवा (कान) जिसके वह (सर्प)
(7) अब्जनाभ – अब्ज है नाभि में जिसके वह (विष्णु)
(8) श्रीश – श्री का ईश है जो वह (विष्णु)
(9) मुरलीधर – मुरली को धारण करने वाले वह (श्रीकृष्ण)
(10) गिरिधर – गिरि को धारण करने वाले वह (श्रीकृष्ण)

12. (क) धोबी ने कपड़े अच्छे धोए।
(ख) सुदामा कृष्ण के पक्के मित्र थे।

13. (क) बालू से तेल निकालना – निरर्थक प्रयास करना
(ख) अंधे की लाठी होना – एकमात्र सहारा

14. 'चट मंगनी पट ब्याह' – शुभ कार्य तुरन्त करना

कु. पू. उ.

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

"खण्ड - 4"

15. पद्यांश — सीत को ---------- छिपाइ कै।

प्रसंग - प्रस्तुत पद्यावतरण "कक्षा-10" की हिन्दी की पाठ्यपुस्तक "क्षितिज" के पद्य भाग के "पाठ-3 ऋतुवर्णन" से लिया गया है। इसके रचयिता रीतिकालीन रीतिबद्ध काव्यधारा के अग्रगण्य कवि "सेनापति" हैं। मूलतः यह पाठ सेनापति द्वारा रचित ग्रन्थ "कवित्तरत्नाकर" से लिया गया है। प्रस्तुत पद्यावतरण में कवि ने शीत ऋतु का वर्णन सेना के सेनापति के आचरण में किया है।

व्याख्या - शिशिर ऋतु का वर्णन करते हुए कवि सेनापति कहते हैं कि शीत रूपी सेनापति पूरे दल-बल के साथ चढ़ाई कर देता है जिसके प्रकोप से पूरी प्रकृति पराजित हो जाती है। आग का ताप भी कम हो जाता है तथा सूर्य भी चन्द्रमा के समान शीतल व ठण्डा लगने लगता है। ठण्डी बर्फीली हवाओं की चुभन पैने तीरों की भाँति लगती है और ऐसा प्रतीत होता है कि गर्म हवा भी शीत के प्रकोप से बचने के लिए किसी बड़े भवन के कोने में जा छिपी है। लोग शीत के प्रकोप से बचने के लिए आग सुलगाते है जिससे धुएँ के कारण उनकी आँखों से आसूँ बहते है ऐसा लगता है कि लोग आग पर गिर रहे हैं तथा उसे थोड़ा सा सुलगाकर अपने हृदय से लगा रखा है। आग के चारों ओर हाथ फैलाकर मानों उसे शीत के भय से बचाना चाहते हैं और उसे अपनी छाती की छाया में छिपाकर रखा है। इस प्रकार शीत रूपी सेनापति के आक्रमण से पूरी प्रकृति पराजित हो गयी है।

द्वारा अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

विशेष :—
(1) पूरे पद्यावतरण में कवि ने शीत को सेनापति के सिद्ध करने के लिए सांगरूपक व मानवीकरण अलंकार का प्रयोग किया है।
(2) "पसारि पानि" व "छतियाँ की छाँह" में अनुप्रास अलंकार का प्रयोग किया है।
(3) "मानो शीत जानि" में उत्प्रेक्षा अलंकार है।
(4) भयानक रस की प्रधानता है।
(5) कवित्त छंद (वार्णिक छंद, 31 वर्ण) का प्रयोग किया है।
(6) ब्रज भाषा है।
(7) काव्य छटा मनोरम है।

BSER-164/2018

16. गद्यांश — मियाँ नूरे ---------- डाल दी गई।

प्रसंग — प्रस्तुत गद्यावतरण हमारी हिन्दी की पाठ्यपुस्तक "क्षितिज" के "पाठ - 11 ईदगाह" से लिया गया है। इस पाठ के लेखक हिन्दी साहित्य जगत में "कलम के सिपाही" के नाम से प्रसिद्ध "मुंशी प्रेमचन्द" (सन् 1880 - सन् 1936) हैं। प्रस्तुत गद्यावतरण में हामिद के मित्र नूरे द्वारा खरीदे गये वकील के अंत समय का वर्णन किया गया है।

व्याख्या — मुंशी प्रेमचन्द वर्णन करते हुए बताते हैं कि हामिद के मित्र नूरे द्वारा ईदगाह में खरीदे गये वकील का अंत उनकी प्रतिष्ठा व सम्मान के अनुरूप गौरवमय हुआ। नूरे ने सोचा वकील जैसा बड़ा आदमी जमीन पर तो बैठ नहीं सकता है। यह तो उसके सम्मान का सवाल है। ऐसा विचार करके नूरे ने दो कील ठोककर उन पर लकड़ी का एक पट्टा रख दिया।

कृ.पृ.उ.

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

उस पर साफ कागज बिछाकर एक राजा की भाँति वकील को उस पट्टे पर रखा गया। नूरे ने उनकी प्रतिष्ठानुकूल उन्हें पंखा झलना शुरु कर दिया। वकील जिस अदालत में बैठा करते हैं वहाँ तो उनकी सुविधा के लिए पंखे लगे होते हैं तो इनके लिए एक साधारण पंखे की व्यवस्था भी ना हो, ऐसा सोचकर नूरे वकील को पंखे से हवा झल रहा था। वकील इतना काम करते हैं, इस कारण उनका मस्तिष्क गर्म ही रहता है। बांस के पंखे से वकील को हवा दी जा रही थी। उस पंखे से इतनी तेज हवा दी अथवा पंखे की चोट लगने से वकील साहब जमीन पर आ गिरे और सुविधामय वातावरण से सीधे मृत्यु को प्राप्त हो गये। खिलौने के वकील का मिट्टी से बना चोला मिट्टी में ही मिल गया। इस सबसे नूरे बड़ा उदास हुआ और जोर-जोर से रोने लगा। मृत वकील साहब की अस्थियाँ बाहर घूरे पर डाल दी गयी। इस प्रकार नूरे का वकील गौरवमयी मृत्यु को प्राप्त हुआ।

विशेष -
(1) भाषा सरल व सुबोध है।
(2) नूरे के वकील के अंत का वर्णन है।
(3) भाषा शैली प्रभावशाली व वर्णनात्मक है।

17. जनक दरबार में अपने गुरु शिव के धनुष भंग होने का समाचार पाकर परशुराम अत्यन्त क्रोधित हो गये और जनक दरबार में पहुँचकर शिव धनुष तोड़ने वाले का नाम पुछा। राम ने विनम्रतापूर्वक उनसे कहा कि यह कार्य उनके किसी दास का है। तब परशुराम ने शिव धनुष

तोड़ने वाले को सहस्रबाहु के समान अपना शत्रु बताकर उसके संहार की बात कही। लक्ष्मण ने कहा - हमने बचपन में ऐसे बहुत धनुष तोड़े परन्तु पहले कभी आपने ऐसा क्रोध नहीं किया। इस प्रकार लक्ष्मण द्वारा शिव धनुष की तुलना साधारण धनुष से करने पर परशुराम का क्रोध और भी बढ़ गया और दोनों के मध्य व्यंग्योक्ति पूर्ण संवाद चलते रहे। विश्वामित्र ने संतुलन बिन्दु का काम किया और परशुराम के चरम क्रोध को प्रशमित किया।

परन्तु लक्ष्मण ने फिर से परशुराम पर व्यंग्य किया कि वे केवल अपने घर के ही वीर है। उनका कभी वीर व्यक्ति से सामना नहीं हुआ। इस पर तो परशुराम ने अपना फरसा उठा लिया और सभा को रक्तपात की आशंका होने लगी।

"लखन उतर आहुति सरिस भृगुबर कोप कृसानु
बढ़त देख जल सम बचन बोले रघुकुलभानु"

लक्ष्मण के व्यंग्य वचनों ने परशुराम की क्रोधाग्नि में आहुति के समान कार्य किया। इसे बढ़ता देख अंततः राम ने जल के समान अपने शीतल वचनों से परशुराम की क्रोधाग्निशांत की।

इस प्रकार राम के विनययुक्त वचनों से ही परशुराम की क्रोधाग्नि अंततः शान्त हुयी।

18. संत पीपा का जन्म खींची चौहान राजवंश में गागरोन (राजस्थान) में विक्रम संवत 1390 को हुआ। उनके पिता एक राजा थे। पिता की मृत्यु के बाद वे उनके उत्तराधिकारी बने। प्रारम्भ में वे मूर्ति पूजक थे तथा देवी दुर्गा की उपासना किया करते थे। बाद में वैष्णव भक्त मण्डली के मुखिया की सलाह पर वे गुरू रामानन्द के पास गये और उनके उपदेशानुसार

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

सम्पूर्ण राजपाट त्यागकर निर्गुण भक्ति करने लगे।
गुरु रामानन्द के बारह शिष्यों में कबीर, धन्ना, रैदास, पीपा व सन्त सेन निर्गुण उपासक व कवि थे। इनमें से कबीर, रैदास, पीपा की वाणियाँ प्रचलित है। इन सभी ने निर्गुण भक्ति काव्यधारा को अपनाया था।
सन्त पीपा के कोई स्वतंत्र ग्रंथ नहीं मिलते परन्तु उनकी कुछ रचनाएँ ग्रंथ साहिब में संकलित है। उन्होंने लोगों को निर्गुण भक्ति का उपदेश दिया।
उस समय समाज में जाँति-पाति का भेदभाव, बाह्याडम्बर, व बहुदेववाद प्रचलित था। पीपा ने इनका विरोध कर समाज को आदर्श मार्ग पर चलने का उपदेश दिया। उनका मानना था-

"कायउ देवा कायउ देवल कायउ जगंम जाति
कायउ धूप दीप नहीं वेदा कायउ पूजउ पाति"

अर्थात सब कुछ इस शरीर में ही है तथा आत्मा व परमात्मा एक ही है। उन्होंने इसी प्रकार के उपदेशों को जनता तक पहुँचाया और निर्गुण भक्ति काव्यधारा का प्रचार किया। इस प्रकार सन्त पीपा ने निर्गुण भक्ति काव्यधारा में अपना उल्लेखनीय योगदान दिया।

---

19. गोपियाँ श्रीकृष्ण की रूपमाधुरी छवि पर आसक्त थी। उनकी आँखे श्रीकृष्ण की रूप रस की लालची हो गयी तथा उनकी रूप माधुरी छवि से चाहकर भी बाहर नहीं निकल पा रही थी। वे तो श्रीकृष्ण को ही अपना प्रियतम मानती हैं तथा उनके रूप रूपी शहद पर आसक्त मधुमाक्खियाँ बन गयी हैं। जिस पर शहद पर आसक्त मधुमाक्खियाँ उससे चाहकर भी बाहर नहीं निकल पाती हैं, ठीक उसी प्रकार गोपियाँ श्रीकृष्ण के

परीक्षार्थी द्वारा अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

रूप सौन्दर्य के लालच से कृष्ण की दासी बन गयी है।

20. 'कल और आज' कविता गर्मी की तपिश भरी दुरूहता के पश्चात वर्षा ऋतु के मनभावन आगमन का वर्णन करती है। इस कविता में कवि नागार्जुन ने ऋतु चक्र का अत्यन्त सजीव वर्णन किया है।
ग्रीष्म ऋतु में उदास व हताश किसान मौसम को गालियाँ देते हैं। पक्षीवृंद धूल में स्नान करता है। खेतों में वीराना उजाड़पन रहता है तथा ग्रीष्म ऋतु की अत्याधिक गर्मी के कारण सभी सन्तापग्रस्त रहते है।
वहीं ग्रीष्म ऋतु के पश्चात वर्षा के आगमन से प्रकृति रूपी सुकन्या नृत्य करती हुयी प्रतीत होती है। धरती नयनाभिराम हो जाती है। मोर - पपीहे केकारव करने लगते हैं। झींगुर व मेढ़क फिर से उत्साहपूर्वक अपनी शहनाई शुरू कर देते हैं।
इस प्रकार नागार्जुन ने ऋतु चक्र को आँखों के आगे साकार कर दिया।

21. 'कन्यादान' कविता में माँ अपनी बेटी को स्त्री जीवन के परम्परागत आदर्शों से हटकर सीख दे रही है। कवि का मानना है कि समाज व्यवस्था स्त्रियों के लिए आचरण सम्बन्धी प्रतिमान गढ़ लेती है। ये आदर्श के मुखौटे में उनके लिए बंधन होते है। 'कोमलता' के गौरव में 'कमजोर' होने का उपहास छिपा है। लड़की जैसा न दिखाई देने में इसी आदर्शीकरण का प्रतिकार है। बेटी माँ के सबसे निकट व उसके सुख-दुःख की सच्ची सहेली होती है। इसी कारण उसे अंतिम पूंजी कहा गया है। माँ बेटी को अपने चेहरे की सुन्दरता पर न रीझने की शिक्षा देती है। कविता में कोरी भावुकता नहीं माँ के अनुभवों की पीड़ा की प्रामाणिक अभिव्यक्ति है। कवि ऋतुराज ने कविता के

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

माध्यम से नारी जीवन के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त की है।

22. "एक अद्भुत अपूर्व स्वप्न" निबंध भारतेन्दु हरिश्चन्द्र द्वारा रचित है। उन्हें आधुनिक हिन्दी गद्य विधा का प्रवर्तक माना जाता है। इस निबंध की भाषा शैली पर विचार –

प्रस्तुत निबंध में कई प्रकार की भाषा शैली अपनायी गयी है–

(क) विचारात्मक शैली–

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने विचारात्मक शैली अपनाते हुए लिखा है – "फिर सोचा क्यों ना एक देवालय बनाकर छोड़ जाऊँ"। इस प्रकार उन्होनें विचारात्मक शैली अपनायी।

(ख) व्यंग्यात्मक शैली–

"हरि कृपा से इतना धन हाथ लगा कि दस पाँच पीढ़ीयों तक काम आ जायेगा और पाठशाला का सब खर्चा भी चल जाएगा।"

"मुग्धमणि शास्त्री की प्रशंसा में तो सरस्वती भी लजाती है।"

इस प्रकार उन्होनें व्यंग्यात्मक शैली भी अपनायी। इसके अतिरिक्त उन्होनें वर्णनात्मक व भावात्मक शैली का भी प्रयोग किया है। यह तत्सम प्रधान हिन्दू व हिन्दी वाक्य रचना की शैली है।

निबंध की भाषा पात्रानुकूल कोमल व व्यंग्यात्मक है।

23. 'गौरा' संस्मरण में महादेवी वर्मा बताती हैं कि गौरा एक अत्यन्त सुन्दर, आकर्षक व दुधारू गाय थी।

परीक्षार्थी द्वारा अंक | प्रश्न संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

इस गाय के आ जाने पर लेखिका ने ग्वाले से दूध लेना बन्द कर दिया। ईर्ष्यावश ग्वाले ने गाय को खत्म करने का विचार किया। इस विचार से उसने गुड़ में एक सूई रखकर गाय को खिला दी। वह सूई गौरा के रक्त संचार के साथ हृदय तक पहुँच गयी। डॉक्टरों ने कहा कि अब गौरा की मृत्यु निश्चित है। अंततः वह सूई रक्त संचार से होते हुए हृदय तक पहुँच गयी और हृदय को भेद दिया जिससे रक्त संचार बंद हो गया व गौरा की मृत्यु हो गयी।
इस प्रकार गौरा की मृत्यु का कारण ग्वाले द्वारा दी गयी सूई थी जिसने उसके हृदय को भेद दिया था।

24. "ईदगाह" मुंशी प्रेमचन्द की बाल मनोविज्ञान पर आधारित कहानी है। ईदगाह में हामिद के अन्य सभी मित्र अच्छे-अच्छे खिलौने ले रहे थे और खा-पी रहे थे। परन्तु हामिद के पास केवल तीन पैसे ही थे। उसने आखिर में चिमटा खरीदने का ही निर्णय लिया क्योंकि उसकी बूढ़ी दादी अमीना के हाथ रोटियाँ सेकते समय जल जाते थे। हामिद से अपनी दादी की यह स्थिति देखी नहीं जाती थी। हामिद ने अपनी दादी की आवश्यकता का विचार करके अंततः वह चिमटा खरीदने का निर्णय लिया। हामिद को उस समय भी केवल अपनी दादी की ही चिंता थी। उसने अपने लिये कुछ नहीं लिया।

25. 'दामिनी दमक, सुर चाप की चमक, स्याम' उक्त पंक्तियाँ कवि सेनापति द्वारा रचित ऋतुवर्णन से ली गयी है। इनमें वर्षा ऋतु (सावन माह) का वर्णन है। वर्षा ऋतु में आकाश में चमकने वाली बिजली व इन्द्रधनुष की शोभा का वर्णन किया गया है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

26. 'मातृ वन्दना' कविता कवि सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' द्वारा रचित कविता है। इसमें कवि का प्रखर राष्ट्र प्रेम व भारत माँ के प्रति भक्ति भाव मुखरित हुआ है। इस कविता में कवि अपने श्रम का श्रेय भारत माता को देता है तथा अपने श्रम सिंचित सब फल माँ के चरणों में अर्पित करना चाहता है।

27. 'आखिरी चट्टान' निबंध में मोहन राकेश द्वारा वर्णित कन्याकुमारी भारत के दक्षिणी भाग में तमिलनाडु में स्थित है। कन्याकुमारी में ही स्वामी विवेकानन्द ने समाधि ली थी तथा वहाँ उनका मन्दिर बना हुआ है। इसी कारण कन्याकुमारी का आध्यात्मिक दृष्टि से महत्व है।

28. दादू दयाल ने अपने शिष्यों को परनिन्दा न करने का उपदेश देते हुए कहा है कि दूसरों की निन्दा करने वाले व्यक्ति के हृदय में राम का निवास नहीं हो सकता है। व्यक्ति को परनिन्दा नहीं करके निन्दा-स्तुति को एकसमान भाव से ग्रहण करना चाहिए।

29. (i) तुलसीदास-
रामभक्त कवि तुलसीदास का जन्म विक्रम संवत 1589 में उत्तरप्रदेश के ~~राज्य~~ बांदा जिले के राजापुर गांव में हुआ। इनके पिता का नाम आत्माराम व माता का नाम हुलसी देवी था। अभुक्त मूल नक्षत्र में पैदा होने के कारण माता-पिता ने इन्हें त्याग दिया और

मुनिया नामक दासी को दे दिया। इनका बाल्यकाल कष्टपूर्ण बीता। इनके गुरु का नाम नरहरिदास व पत्नी का नाम रत्नावली था। 1631 वि. स. में इन्होंने रामचरितमानस की रचना की व अंत समय में हनुमान जी की स्तुति की। इनकी मृत्यु संवत 1680 में गंगा नदी के किनारे श्रावण शुक्ल सप्तमी को हुयी।

रचनाएँ –
रामचरितमानस, रामललानहछु, रामज्ञाप्रश्न, बरवैरामायण, जानकीमंगल, पार्वती मंगल, वैराग्य संदीपनी, कवितावली, दोहावली, गीतावली, श्रीकृष्ण गीतावली।

(ii) मुंशी प्रेमचन्द –
हिन्दी साहित्य जगत में कलम के सिपाही नाम से प्रसिद्ध मुंशी प्रेमचन्द का जन्म सन् 1880 में वाराणसी में लमही ग्राम में हुआ। इनका मूल नाम धनपतराय था। उर्दू में ये नवाबराय के नाम से लिखते थे। इन्हें शरतचन्द्र चट्टोपाध्याय ने उपन्यास सम्राट कहा। 1908 में इनका पहला कहानी संग्रह सोजे वतन प्रकाशित हुआ। परन्तु देश-प्रेम से औत-प्रोत होने के कारण अंग्रेजी सरकार ने इसे खारिज कर दिया। इनकी मृत्यु सन् 1936 ई. में हुयी।

रचनाएँ –
उपन्यास – गोदान, गबन, कर्मभूमि, प्रेमभूमि, प्रेमाश्रम, रंगभूमि
कहानी संग्रह – मानसरोवर (आठ भाग)
नाटक – कर्बला, संग्राम
पत्रिकाएँ – मर्यादा, माधुरी, हंस, जागरण

30. (i) आगे सीधा व बांये मुड़ना निषेध (ii) किसी भी संकेत पर निषेध
(iii) आगे से दांये मुड़ने पर निषेध (iv) आगे व पीछे दोनों तरफ मुड़ना निषेध

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

"खण्ड -2"

7. (ख) राजस्थान में गहराता जल संकट

(i) प्रस्तावना
(ii) जल संकट के कारण
(iii) जल संकट निराकरण के उपाय
(iv) उपसंहार

(i) प्रस्तावना -

"जल ही जीवन है"

जल पृथ्वी पर पायी जाने वाली एक ऐसी ~~चीज~~ चीज है जो पदार्थ की सभी अवस्थाओं में पायी जाती है- ठोस (बर्फ), द्रव (जल), गैस (वाष्प)। पृथ्वी के धरातल पर 71% जल व 29% स्थल है। इस जल में से 97% जल महासागरों में खारे पानी के रूप में व शेष 3% मीठा जल पाया जाता है। इस जल में से भी 69% हिम रूप में, 30% भूमिगत रूप में व मात्र 1% जल मानव के उपयोग हेतु है। इस प्रकार जल की अत्यन्त कम उपलब्धता के बावजूद जल का अति दोहन किया जा रहा है। राजस्थान जैसा राज्य जहाँ वर्षा अत्यन्त कम होती है तथा मरुस्थल का अत्यधिक प्रसार है, जल की कमी एक गंभीर संकट बन गयी है। जल प्रबंधन इसी कारण अत्यन्त आवश्यक है।

(ii) जल संकट के कारण -

~~स्वर~~ "स्वच्छ जल तभी स्वस्थ कल"

परीक्षार्थी उत्तर

राजस्थान में जल संकट एक गंभीर समस्या है। इस समस्या के अनेक कारण है जो निम्न है -

1. राजस्थान की भौगोलिक स्थिति के कारण यहां अत्यल्प वर्षा होती है।
2. जल संग्रहण पद्धति विकसित नही है।
3. भू-जल का अत्यधिक दोहन किया जाता है।
4. जल संरक्षण के प्रति जागरूकता की कमी है।
5. परम्परागत जल स्त्रोतों की उपेक्षा।
6. जल की व्यर्थ बर्बादी।
7. मानसून की अनिश्चितता।

इस प्रकार इन कारणों से जल संकट अपने विकराल रूप में आ गया है। नदियां सूख गयी है तथा पशुओं के लिए पानी पर्याप्त नहीं बचा है। लोग भी जल संरक्षण के प्रति लापरवाही बरतते है। सरकार भी जागरूक नही है। यदि यही स्थिति रही तो शीघ्र ही तीसरा विश्व युद्ध पानी की कमी के कारण होगा।
इस स्थिति को गंभीरता से लेने की आवश्यकता है।

(iii) जल संकट निराकरण के उपाय -

"जल है तो कल है"

राजस्थान में गंभीर जल संकट को देखते हुए सरकार ने विभिन्न प्रकार के प्रयास किये है। इनमें से एक उल्लेखनीय प्रयास मुख्यमंत्री जल स्वावलम्बन योजना है। इसके तहत 5000 गाँवों तक पेयजल की पूर्ति का लक्ष्य रखा गया है। यह योजना 8 वर्षों तक चलेगी। इसके अतिरिक्त सरकार द्वारा व व्यक्तिगत स्तर पर आवश्यक प्रयास अपेक्षित है।

व्यक्तिगत प्रयास -

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

(1) विभिन्न नहरों को आपस में जोड़ना व जागरूकता फैलाना।
(2) घरेलू जल की व्यर्थ बर्बादी को रोकना।
(3) जागरूकता अभियान चलाना।
(4) भू जल का अति दोहन न करना।
(5) परम्परागत जल स्त्रोतों का संरक्षण।
(6) जल संग्रहण विधि विकसित करना।
इस प्रकार हर स्तर पर प्रयास से जल संकट अवश्य दूर होगा।

उपसंहार -
जल जीवन के लिए अत्यन्त आवश्यक है। जल का संरक्षण ही जीवन का संरक्षण है। हमें हर स्तर पर प्रयास करके जल संरक्षण करना ही चाहिए। आशा है सरकार इस ओर ध्यान देगी।

प्रश्न संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

विद्युत अभियंता को शिकायती पत्र

8. सेवा में,

श्रीमान् विद्युत अभियन्ता महोदय,
विद्युत कार्यालय,
जयपुर।

विषय – विद्युत की नियमित व पर्याप्त पूर्ति हेतु पत्र।

मान्यवर,

उपर्युक्तविषयान्तर्गत सविनय निवेदन है कि मैं ईशान्त, लक्ष्मीनगर (जयपुर) का निवासी हूँ। हमारे क्षेत्र में विद्युत की नियमित व पर्याप्त पूर्ति नहीं होती है जिससे अनेक कार्यों में बाधा आती है।

अब अगले माह से हमारी बोर्ड परीक्षा प्रारम्भ होनेवाली है। हमारे वर्ष भर की मेहनत इसी तैयारी पर निर्भर है। विद्युत की अक्सर कटौती होती रहती है जिससे हमारा अध्ययन बाधित हो रहा है।

आशा है कि आप बोर्ड परीक्षा की तैयारी को ध्यान में रखकर विद्युत की नियमित व पर्याप्त पूर्ति के लिए आवश्यक कदम उठाकर अनुग्रहीत करेंगे।

सधन्यवाद।

दिनांक – 17-03-18

प्रार्थी
ईशान्त
लक्ष्मीनगर (जयपुर)

'समाप्त'